International Journal of Applied Research 2023; 9(7): 308-312

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2023; 9(7): 308-312
www.allresearchjournal.com
Received: 01-04-2023
Accepted: 03-05-2023

**Mohammad Fida Alakozay**
Ph.D. Scholar, Lucknow University, Lucknow, Uttar Pradesh, India

**Corresponding Author:**
**Mohammad Fida Alakozay**
Ph.D. Scholar, Lucknow University, Lucknow, Uttar Pradesh, India

# पश्तो साहित्य के आधुनिक काल का उद्भव एवं विकास

**Mohammad Fida Alakozay**

**सारांश**

पश्तो भाषा अफग़ानिस्तान की राष्ट्र भाषा है। पश्तो साहित्य भी अन्य भाषाओं जैसे अपना विकास यात्रा विभिन्न कालों एवं युगों में तय करती हैं। जिसका आधुनिक काल 20वी ई0 शती के दूसरे दशक में अरंभ किया जाता है। पश्तो साहित्य के आधुनिक काल में परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों के विकासक्रम को ध्यान में रखकर पश्तो साहित्य का आधुनिक काल (रोख़ानतिया, वीख़तिया,अवख़तून,समकालीन) चार युगों में विभाजित किया गया है। हर युग का समय सीमाकरण और नामकरण तत्कालीन परिस्थितियों तथा साहित्य विषय वस्तु को ध्यान में रखकर हुआ है।

**कूट शब्दः** आधुनिक काल, रोख़ानतिया, वीख़तिया, अवख़तून, समकालीन

## प्रस्तावना

पश्तो साहित्य इतिहास का आधुनिक काल का अरंभ 20वी शताब्दी से माना जाता है। यहाँ यह कहना जरूरी है कि 1893 ई0 में ड्योरिंड लाइन द्वारा पश्तून जाति का विभाजन होता है। कुछ ड्योरिंड लाइन के उस पार ब्रेटिश इंडिया में और कुछ इस पार अफ़ग़ानिस्तान में रह जाते हैं। दोनों तरफ़ों में राजनीतिक परिस्थितियाँ एक जैसे न होने के कारण पश्तो सहित्य का परिवर्तन एवं विकास भी एक साथ नहीं होता है पर आधुनिकता की यात्रा एक शुरु करता है। यहाँ हम आधुनिक काल का अध्ययन अफ़ग़ानिस्तान में पश्तो साहित्य को ध्यान में रखते हुए करते हैं।

अफ़ग़ानिस्तान में पश्तो साहित्य के आधुनिक काल का अरंभ कब से होता है, इस में विद्वानों का मतभेद है सामान्य रूप से इसके बारे में विद्वानों के छः मत निकलते हैं -

1. पश्तो साहित्य का आधुनिक काल भारत को अंग्रेज़ों के आने के बाद शुरु होता है।

2. आधुनिक काल अफ़ग़ानिस्तान को अंग्रेजो के आने के बाद होता है।
3. आधुनिक काल का अरंभ अफ़गानिस्तान में अमीर शेराली ख़ान के शासन काल से शुरु होता है
4. आधुनिक काल का अरंभ 19 वी शती के 70 वी दशक में होता है
5. आधुनिक काल का अरंभ अफ़ग़ानिस्तान के स्वतंत्रता संग्राम 1919 ई0 से होता है।
6. पश्तो साहित्य के आधुनिक काल का अरंभ 1931 ई0 से होता है।)[1]

ये सब मत विचारणीय है। प्रथम मत के अनुसार पश्तो साहित्य का अरंभ भारत को अंग्रेज़ों के आने से होता है। इस मत के अनुसार पाश्चात्य साहित्य का प्रचार भारत में होकर पश्तो साहित्य तक पहुंचा है। भारत में अंग्रेजों का अगमन 17 वी शती से होता है पर पश्तो साहित्य में 1900 ई0 तक पाश्चात्य साहित्य का कोई खास प्रभाव नहीं होता है। कुछ विद्वान इसे सिद्ध करते हुए लिखते हैं कि अंग्रेजों के विरोध में प्रथम कविता कासिम अली ने रची है जो आधुनिक काव्य का पहला उदाहरण हो सकता है। कासिम अली ने यह कविता 1816 ई0 में लिखी है जो इस प्रकार है -

दे अंग्रेज़ तंबूर तुम दलता ग़गीगी
नस्वारा शो हाकिमान फ़र्ख़ाबाद
हकूमत दे पख़तानः ल लासा लाड़
वार्ख़ाता कड़ नवाबान फ़र्ख़ाबाद.

हिन्दी अर्थ

अंग्रेजों के गीत यहाँ गाये जाते हैं, इसाई लोग यहाँ हाकिम हुए,पश्तूनों की शासन गई, फर्ख़ाबाद के नवाब भी नाकरार है।

आलोचकों का मत है कि यह कविता आधुनिक मान्यताओं को पूरी नहीं कर पाती है। इसमें न कविता जैसे गति है और न सही अर्थ इसे लिया जा सकता है। यहाँ तक कि इससे तत्कालीन लोक कविता भी शब्द और अर्थ में सुन्दर है इसलिए इसे आधुनिक कवि मानना उचित नहीं हैं।[2]

दूसरा मत भी इस प्रकार है। यह लोग आधुनिककाल का अरंभ अफ़ग़ानिस्ताना पर अंग्रेज़ों की प्रथम आक्रमण (1840 ई) से मानते हैं। इस मत पर भी आक्षेप है। आलोचक कहते हैं कि इस समय पश्तो साहित्य में आधुनिकता का कोई छाप दिखने को नहीं मिलता है। इस युग का प्रसिद्ध कवि (हनान बारकज़ैय) है जो मध्यकालीन कवि हमीद मुमंद की फ़ार्सी शैली के अनुयायी थे, तो इसलिए यह मत भी आधुनिक आलोचकों को स्वीकार्य नहीं है।

तीसरे मत के अनुसार आधुनिक काल अरंभ अमीर शेराली ख़ान के शासन काल से माना जाता है। सदीक़ रोही कहते हैं ((यह ठीक है कि शेराली ख़ान के शासन काल (1886-1888 ई0) में आधुनिकता की ओर जाने की कदम उठाये जाते हैं, व्यापार ने विकास किया, प्रशासन औल सेना में नये परिवर्तन हुए, शम्सुलनहार नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ, स्कूल खुले, अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए एक व्यवस्थित सेना बनी। यद्यपि आधुनिकता के लिए इतने सारे काम हुए फिर भी साहित्य जगत में इनका कोई प्रभाव दृष्टि में नहीं आता है))[3]

इसलिए आधुनिक काल का अरंभ उपरयुक्त समय से नहीं मानना चाहिए।

चौथे मत के अनुसार पश्तो साहित्य का आधुनिक काल 19वी शती का 70 वी दशक में मुलवी अहमद की कहानियों से अरंभ माना जाता हैं। इसमें शक नहीं है कि मुलवी अहमद की कहानियों की भाषा बहुत सरल एवं आकर्षिक है पर उनकी कहानी आधुनिक नहीं, फ़ोक्लोरिक(लोक कथा) जैसै हैं,जिसमें आधुनिक जीवन की अभिव्यक्ति नहीं है।

पांचवे मत पर भी आरोप है। सदीकुल्लाह रोही लिखते हैं (इस मत के अनुसार पश्तो साहित्य का आधुनिक काल स्वतंत्रता संग्राम (1919 ई0) से अरंभ होता है पर इस समय के किसी आधुनिक काव्य का उदाहरण नहीं देता है तो कैसे इस समय को आधुनिक काल का अरंभ मान सकते हैं।)[4]

छटे मत के अनुसार पश्तो साहित्य का आधुनिक काल 1931 ई0 से अरंभ होता है। इस मत के अनुसार मुंशी अहमद जान आधुनिक साहित्य का प्रवर्तन करते हैं। मुंशी अहमद जान की लेखन शैली काफी सुन्दर एवं आकर्षक है। आधुनिक चेतना का ध्यान उनकी कहानियों में रखा गया है। पर इस से पहले अफ़ग़ानिस्तान में (सिराजुलाख़बार) नामक पत्रिका का पुनर प्रकाशन (1911ई0) में होता है। इसमें कुछ कहानी और निबंध प्रकाशित हुए थे जिनमें आधुनिक भाव है, इसलिए (पश्तो साहित्य का इतिहास) का रचनाकार सदीक़ रोही यही 20 वी शती का दूसरा दशक पश्तो साहित्य के आधुनिक काल का अरंभ काल मानते हैं तथा इससे अन्य साहित्यकार भी सहमत है।

आगे चलकर पश्तो साहित्य के आधुनिक काल में परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन होता है। इन परिवर्तनों के विकासक्रम को ध्यान में रखकर पश्तो साहित्य का आधुनिक काल (रोख़ानतिया, वीख़तिया,अवख़तून,समकाली) चार युगों में विभाजित किया गया है। हर युग का समय सीमाकरण और नामकरण तत्कालीन परिस्थितियों तथा साहित्य विषय वस्तु को ध्यान में रखकर हुआ है जिस पर संक्षेप्त रूप से चर्चा करेंगे।

दे रोख़ानतिया पड़ाव (उजवल युग)

बीसवी शती के अरंभ में पश्तो साहित्य में आधुनिकता अभिव्यक्त होती है। तत्कालीन साहित्यकारों ने राष्ट्रीय लोकतंत्र को अपना उद्देश्य मानकर उसे प्रधान और सफ़ल बनाने के लिए साहित्य को एक सशक्त साधन के रूप में प्रयोग किया है। इस युग के साहित्य के विषय देश भक्ति,स्वतंत्रता, शोषण, अत्याचार, भेदभाव,राष्ट्र एकता तथा नई सोच की प्राचार थी। इस युग के कवियों तथा साहित्यकारों ने मध्यकाल के काव्य शैली का विरोध किया। इस युग में काव्य सृजन के लिए अलंकार और छन्द के अपेक्षा कथा वस्तु पर अधिक ध्यान रखा गया। यह आधुनिक काल का प्रारंभिक युग था। इसमें साहित्यकार नई दिशा बनाने के प्रयास करते रहें। पश्तो साहित्य जगत में नई विधाओं का अविर्भाव हुआ जो अगले युग के मार्गदर्शक के रूप में रहा। वास्तव में यह आधुनिक युग और आधुनिक साहित्य विधाओं का एक नया आगाज़ था जो अन्य युगों को बाधाएँ दूर करता है और उन्हें रास्ता खोलता है। सालिह मुहम्मद कंदहारैय, ग़ुलाम मुहैयुद्दीन अफ़ग़ान, अब्दुल अली मुस्तग़नी, अब्दुलहादी दावी, अब्दुल बाक़ी काकड़ आदि इस युग के प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार रहे हैं।

वीख़तिया पड़ाव (जागरण युग)

सन् 1933 ई0 में ज़ाहिर शाह अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह (राष्ट्रपति) बनते हैं, और चालीस साल अफ़ग़ानिस्तान पर शासन करते हैं।इनने शासन काल के दूसरे दशक में पश्तो साहित्य एक ओर पश्तो भाषा के सुधार एवं विकास के आन्दोलन के कारण दूसरी ओर लोकतंत्र के आन्दोलन के कारण बहुत शीघ्र एक नये पड़ाव में प्रवेश करता है जिसे विद्वानों ने (वीख़तिया पड़ाव अथवा जागरण युग) कहा है। आलोचनात्मक यथार्थवाद था। बॉयरोक्रातिज़म, इतोक्रासी, जुल्म, शोषण, सामंतो और अमीरों के शोषण के विरोध में साहित्य रचना करते थे। इसके साथ इस युग में स्त्री आधिकारों, पश्तून-बलोच की आधिकारों, सामाजिक प्रथाओं के

विरोध तथा आर्थिक समस्याओं के बारे में भी काफी रचनाएँ हुई हैं। समाजवादी विचारधारा भी इस युग के अक्सर कवियों ने अपनाई है तथा अपनी कविताओं में इसका पालन किया हैं। इस युग में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग आधिक हुआ है। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक सब मे व्यंग्य की प्रधानता है। काव्य सौष्टव की दृष्टि से इस युग में पिछले युग की अपेक्षा बहुत बदलाव आया पर फिर भी यहाँ काव्य के बाह्य सुन्दरता से चिंतन पक्ष को आधिक महत्व दिया जाता है।यहाँ साहित्य को बौद्धिक चिंतन की प्रचार-प्रसार का एक साधन बनाया गया था। इस युग में (कला कला के लिए) कथन की उपेक्षा की गई और साहित्य को जीवन से जोड़ने का पूरा प्रयास किया गया।

इस युग के प्रसिद्ध रचनाकार है- गुलपाचा उलफ़त, अब्दुलरऊफ बेनवा, सुलैमान लायक़, अब्दुलबारी जहानी, बहाउद्दीन मजरोह, मुहम्मद सदीक़ पसरेलैय, सादुदीन श्पून, क्यामुद्दीन ख़ादिम ....आदि।

यह भी स्मरणीय होगा कि इस युग के अक्सर रचनाकार अगले युग में भी रहे हैं।

अवख़तून पड़ाव (परिवर्तन युग)

1978 ई0 अप्रेल के 27-28 में अफ़ग़ानिस्तान में एक क्रान्ति होती है। क्रान्ति शुरु में अफ़ग़ानिस्तान के भला के लिए हुई पर धीरे धीरे एक अराजकता पर बदल गई जिसके फलस्वरूप अफ़गानिस्तान पर रूस का आक्रमण हुआ।1978 ई0 से पहले अफ़ग़ानिस्तान के तत्कालीन राष्ट्ररपति (दाऊद ख़ान) के विरोध में राजनीतिक आन्दोलन चल रहा था। ख़ल्क़ नाम के राजनीतिक पार्टी जो कम्योनिज़म विचारधारा से प्रभावित थी दाऊद ख़ान के प्रशासन की सख़्त विरोधी थी। ये लोग एक लोग एक ((अवख़तून अर्थात् बदलाव)) चाहते थे। यही राजनीतिक आन्दोलन तत्कालीन साहित्य में भी प्रतिबिम्बित होता है, और इस युग को साहित्य में अवख़तून पड़ाव अर्थात् परिवर्तन युग का नाम दिया जाता है।[5]

इस युग की कविताओँ, कहानियों, आलोचनाओं का केंद्रीय भाव साम्राज्यवाद का ख़िलाफ़ सामाजिक समनवय तथा तर्की का था।इस उद्देश्य के लिए कवियों को ख़ास प्रशिक्षण भी दिया जाता था। अगर कोई कवि इस आन्दोनलन में भाग नहीं लेता देश छोड़ने पर भी मजबूर होता। 1358 हिज्री (1979 -12-27) में अफ़ग़ानिस्तान पर रूस के अक्रमण के बाद सवितवाद का नाम पश्तो साहित्य में प्रचलित होता है जिसमें अफग़ान-रूस की दोस्ती बढ़ाने के लिए रचनाएँ की जाती थी। अफ़ग़ानिस्तान में 1978 ई0 के इनकिलाब के बाद कविता एवं कथा साहित्य पूंजीवाद के विरोध में ही लिखा जाता था। 1365 हिज्री(1987 ई0) में अफ़ग़ान समाज की राजिनीतिक परिस्थितियों में फिर परिवर्तन आता है। रूस सेना अफ़ग़ानिस्तान छोड़ने पर मजबूर होती है। पूर्व एक दशक की परिवर्तनों का प्रभाव पश्तो साहित्य पर भी होता है तथा साहित्य जगत में भी एक परिवर्तन आता है जिसे (अवख़तून/परिवर्तन) युग कहा गया। 6

पश्तो साहित्य के आधुनिक काल के युगों का प्रवर्तन परिस्थितियों की आधार पर हुआ है। देश-समाज में परिस्थितियों की बदल जाने के साथ कवियों की काव्य विषय भी बदलते रहे हैं, इस कारण कोई कवि तथा लेखक किसी युग विशेष से सीमित नहीं रहे हैं। एक युग के परिस्थितियों के अनुसार दूसरे युग के भी कवि रहे हैं।अतः जागरण युग के अक्सर कवियों ने इस युग में भी रचनाएँ की है और इस युग के रचनाकार भी माने जाते हैं। उनके अतिरिक्त इस युग के प्रसिद्ध रचनाकार है, सदीक काऊन, इस्हाक नंग्याल, अहमदुल्लाह तकल, आरिफ़ ख़ज़ान, अलीगुल पैवंद, अफ़ज़ल टकोर, लतीफ बहांद आदि।

1990 ई0 तक यह युग रहता है। उसके बाद अफ़ग़ानिस्तान में एक अराजकता से आजाती है। केंद्रीय शासन नहीं रहता है और गांव गांव में लड़ाई शुरु होती है। साहित्यकार अपना फ़र्ज़ निभाते है तथा युद्ध के खिलाफ़ रचनाएँ करते हैं। यदि एक ओर से साहित्य के सब विधाओँ में विकास होता है दूरभाग्यवश दूसरी ओर लड़ाई और भी जोर से चलती है।यहाँ तक कि अनेक साहित्यकार युद्ध की कुर्बानी भी होते हैं। इस युग को अभी तक साहित्य में कोई विशेष नाम नहीं दिया गया है। कुछ आलोचक इसे समकालीन और कुछ इसे समून(सुधार) युग कहते हैं, पर यह सर्वमान्य नहीं है।

संदर्भ सूची

1. पश्तो साहित्य का इतिहास, सदीक रोही, पृ 46
2. वही, पृ 47
3. वही, पृ 49
4. वही, पृ 50
5. वही, पृ 154
6. दे अफगानिस्तान तारीख, गुलाम मुहम्मद गुबार, पृ 716